* अध्याय-छठा *

* विभाजन-सम्बन्धी उपन्यासों मे आलोच्य उपन्यासों का स्थान *

भारत-विभाजन भारतीय इतिहास की एक महान अभूतपूर्ण एवं प्रभावशाली घटना थी, जिसके परिणामस्वरूप लाखों लोगों को बेघर होकर अपनी मातृभूमि से विवश होकर निकलना पड़ा। कुछ लोगों को जबर्दस्ती निकाल दिया गया। इसका परिणाम देश की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थिति पर हुआ।

भारत-विभाजन की घटना पर आज तक अनेक साहित्यकारों ने काफी मात्रा में लिखा है। विभाजन की इस घटना में इतना प्रभाव था कि विभाजन के पच्चीस-तीस वर्ष बाद भी इस घटना पर लिखा गया है। जैसे, जगदीश चन्द्र का "मुट्ठीभर काँकर" उपन्यास।

हमें विभाजन की समस्या को चित्रित करनेवाले साहित्य की तीन अवस्थाएँ ज्ञात होती हैं, विभाजन पूर्व की, विभाजन के वक्त की तथा विभाजन के बाद की, विभाजन सम्बन्धी साहित्य का उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं के अनुरूप विभाजन करना संभव नहीं है, क्योंकि रचना में किसी एक अवस्था का चित्रण अधिक होते हुए भी, अन्य दोनों अवस्थाओं का थोडा-सा चित्रण अवश्य होता है। इसलिए जिस रचना में दोनों अवस्थाओं में से किस अवस्था को ज्यादा महत्त्व दिया है उसी अवस्था की रचना स्वीकार कर लिया जाए।

उदाहरणार्थ, विभाजन के पूर्व की परिस्थिति का यथार्थ चित्रण करनेवाले उपन्यास हैं - गुरुदत्त जी का "देश की हत्या", साहनी जी का "तमस", यशपाल का "झूठा-सच", कृष्ण बलदेव वैद जी का "गुजरा हुआ जमाना", राही मासूम रजा का "आधा गाँव" आदि।विभाजन के बाद की अवस्था को चित्रित करने वाले उपन्यास हैं। - जगदीश चन्द्र जी का "मुट्ठीभर काँकर", राही मासूम रजा का "आधा गाँव", यशपाल का "झूठा-सच", रामानंदसागर जी का "और इन्सान मर गया"।

"देश की हत्या" गुरुदत्त जी ने सन् १९५३ ई. मे लिखा है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने लाहौर, पश्चिम पंजाब, दिल्ली आदि को केन्द्र में रखकर देश-विभाजन की समस्या को चित्रित किया गया है। इसमे लेखक ने विभाजन-पूर्व पंजाब के डायरेक्ट एक्शन के समय कॉंग्रेसी नेताओं के झूठे दिलासों, केंन्द्रीय सरकार की उपेक्षाओं और पश्चियमी पंजाब से हिन्दुओं का उखड़ना, शरणार्थियों की शारीरिक तथा मानसिक समस्याओं आदि का मार्मिक चित्रण किया है।

लेखक ने इस उपन्यास में एक ओर मुस्लिमों की कट्टर धर्मान्धता को चित्रित किया है, तो दुसरी ओर नेताओं की विश्वासघात की नीति को। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने समाज की कटुता, जीवन की यथार्थ स्थिती, भ्रष्टाचार आदि का स्वाभाविक-चित्रण किया है। इस उपन्यास में उनकी अनूठी वर्णन-शैली का परिचय प्राप्त होता है। मुस्लिमों के बारे में कॉंग्रेस का मत, देश की जनता के साथ वचनभंग आदि ऐतिहासिक सत्य घटनाएँ इसमे चित्रित हैं।

यशपाल कृत "झूठा-सच" का प्रकाशन सन् १९५८-६० ई. में हुआ है। कथानक की बृहद्ता- के कारण इसे दो भागों में विभाजित किया गया है। आलोच्य उपन्यास का प्रथम भाग "वतन और देश" सन् १९५८ ई. में तथा द्वितीय भाग "देश का भविष्य" सन् १९६० ई. में प्रकाशित हुआ है। आलोच्य उपन्यास में घटनाओं की बहुलता है। "झूठा-सच" के दोनों भागों "वतन और देश" तथा "देश का भविष्य" में देश के सामाजिक और राजनैतिक वातावरण को यथासम्भव ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया गया है। इसमें लेखक की यथार्थवादी दृष्टी प्रकट हुई है। आलोच्य उपन्यास के प्रथम भाग में लेखक ने विभाजन के वक्त की भयंकर संघर्षमय स्थिति, हत्याएँ, लूट-पाट, आगजनी की घटनाएँ लाखों लोगों का मारे जाना, लाखों लोगों का बेघर होना आदि घटनाओंका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

उपन्यास के द्वितीय भाग "देश का भविष्य" में यशपाल जी ने विभाजन की समस्या के साथ-साथ प्रेम और विवाह की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है। आलोच्य उपन्यास में लेखक ने विभाजन के बाद की पंजाब, बंगाल तथा कलकत्ता में उत्पन्न भीषण परिस्थितियों, नेताओं की स्वार्थपूर्ण राजनीति, साम्प्रदायिकता,

वर्ग-विषमता जातिवाद, अफसरशाही, सरकारी कर्मचारियों का भ्रष्टाचार आदि का यथार्थ चित्रण उपन्यास का मूल उद्देश्य है।

"आधा गाँव" राही मासूम रजा जी ने सन १९६६ ई. में लिखा है। आलोच्य उपन्यास में लेखक ने गाजीपुर से बारह-चौदह मील दूरी पर स्थित गंगौली नामक गाँव के मुस्लिम समाज का प्रमुख रूप से चित्रण किया है। आलोच्य उपन्यास में विभाजन पूर्व का मुस्लिमों का धार्मिक अंधविश्वास, मान्यताओं, रीति-रिवाजों, सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियों का विभाजन के बाद होनेवाले परिवर्तनों को बड़ी सूक्ष्मता से प्रस्तुत करना उपन्यास का मूल उद्देश्य है।

पाकिस्तान को लेकर मुसलमानों की स्थिति को चित्रित करना आलोच्य उपन्यास की मूलभूत विशेषता है। ग्रामीण मुसलमानों को पाकिस्तान की अस्पष्ट-सी कल्पना है। अलीगढ़ से आनेवाले युवक भोले-भाले किसानों को आंतकित करने के लिये हिन्दुओं के कल्पित अत्याचारों की बातें करते हैं। वे निराधार प्रचार भी करते हैं। फिर भी गंगौली के सारे मुसलमान उनके बहकावे में नहीं आते क्योंकि उन्हें अपनी जमीन से बेहद प्यार है।

आलोच्य उपन्यास "आधा गाँव" में भारत-विभाजन के बाद उत्पन्न होनेवाली स्थितियों, विशेषत: मुस्लिम समाज में पैदा होनेवाली वैराग्य-भावना, विवशता, गरीबी आदि का यथार्थ चित्रण करना उपन्यास की महत्वपूर्ण विशेषता है।

"तमस" भीष्म साहनी जी ने सन् १९७३ ई. में. लिखा है। "तमस" में. लेखक ने मानवीय सम्बन्धों का ह्रास, मूल्यों का विघटन, अंग्रेजी शासकों की कूटनीति, साम्प्रदायिक दंगों तथा आंतक से उत्पन्न होनेवाली स्थितियों को चित्रित किया है। विभाजन-पूर्व साम्प्रदायिक, धार्मिक-संकीर्णता की क्रूर परिणति से उत्पन्न अमानवीय कृत्यों और मूल्यों के टूटने को लेखक ने "तमस" में चित्रित कीया है। "तमस" भारतीय जनता के आन्तरिक संघर्षों के मध्य विकसित होता है। यह उनकी ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक दृष्टि है जो सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक सभी परिस्थितियों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती है। "तमस" में धर्म का विकृत स्वरूप ज्यादा प्रधान है। पूँजीवादी शक्तियाँ अधिक उभरी है। "तमस" में राजनीति और धर्म के अंतर्विरोध को स्पष्ट किया गया है।

"गुजरा हुआ जमाना" कृष्ण बलदेव वैद जी ने सन् १९८१ ई. में. लिखा है। आलोच्य उपन्यास एक ऐसे गाँव का चित्र प्रस्तुत करता है जहाँ विभाजन से पूर्व दो-तीन वर्ष हिन्दू-मुस्लिम एक-साथ शान्ति से रह रहे थे, लेकिन विभाजन के बाद उनमें काफि परिवर्तन हो गया। इस कस्बे के युवक विभाजन के बाद भी अपने को साम्प्रदायिक विद्वेष से दूर रखे हुए थे। इस गाँव के लोगों को लाहौर से बहुत आकर्षण था। विभाजन के बाद मुसलमानों की भड़की हुई धार्मिक भावनाओं एवं लुट-पाट के लोभ के कारण हिन्दुओं को अपना वतन छोड़कर निकलना पड़ा। लेखक ने विभाजन के बाद की हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक विद्वेष को प्रस्तुत उपन्यास में पश्चिमी पंजाब के एक कस्बे में स्थित हिन्दू-मुस्लिमों के सम्बन्धों द्वारा चित्रीत किया है।

एक-दूसरे के वार्तालाप तथा अफवाहों के कथन द्वारा लेखक ने वातावरण की निर्मिति की है। आलोच्य उपन्यास में घटनाओं का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। "देश-विभाजन की समस्या" में कितनी तीव्रता थी यह आलोच्य उपन्यास के प्रकाशन काल से ही ज्ञात होता है क्योंकि लेखक को विभाजन के ३३ वर्ष बाद भी इस घटना ने आकर्षित किया।

सागर लिखित "और इन्सान मर गया" हिन्दी साहित्य की एक महान कृति है। आलोच्य उपन्यास सागर जी ने सन् १९४८ ई. में. लिखा है। इसे चार खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड में विभाजन के बाद की लाहौर की स्थिति को यथार्थ रूप में चित्रित किया है, हिन्दू और मुसलमानों की प्रतिशोध की भावना, द्वितीय खण्ड में लाहौर और पंजाब के भयानक अग्निकाण्ड, तृतिय खण्ड में शरणार्थियों की समस्या, चतुर्थ खण्ड में विभाजन के थपेटे में आये इन्सान की स्थिति आदि का लेखक ने ऐतिहासिक आधार पर यथार्थ चित्रण किया है।

आलोच्य उपन्यास का मूल उद्देश देश के बटँवारे के समय हुई साम्प्रदायिक विभीषिका, अनेक कुत्सित घटनाओं, घृणा, प्रतिशोध और साम्प्रदायिकता की बाढ़ में बहते हुए मानवों की मनःस्थिति, उनकी विवशता, दृढ़ता आदि का यथार्थ चित्रण करना है। प्रस्तुत उपन्यास के यथार्थ तथा सजीव चित्रण का कारण लेखक की अनुभूत सन्निकटता है।

"मुट्ठीभर काँकर" उपन्यास जगदीश चन्द्र जी ने विभाजन के पच्चीस-तीस वर्ष बाद लिखा है। आलोच्य उपन्यास में लेखक ने विभाजन के बाद शरणार्थीयों की पुनर्वास की समस्या, उन समस्याओं का निराकरण आदि का यथार्थ विस्तृत रूप में चित्रण किया गया है। लेखक ने न केवल शरणार्थियों की समस्या को ही चित्रित किया है बल्कि उनके आगमन से स्थानिय लोगों की प्रतिक्रिया ओं को भी चित्रित किया है। आलोच्य उपन्यास में लेखक ने दिल्ली तथा उसके आस-पास के गाँवों का चित्रण किया है।

"मुट्ठीभर काँकर" उपन्यास में विभाजन के बाद शरणार्थियों की लूट-पाट कर अपने गाँव आदि को छोडकर दिल्ली आना, कैम्पों, मैदानों, सड़कों, जहाँ कहीं जगह मिले वहाँ रहना, कठोर परिश्रम करके आपने को विस्थापित से स्थापित करना, स्थानिय लोगों के अविश्वास को सहकर अपने को पुरुषार्थी बनाना आदि विभाजन के वक्त की ऐतिहासिक घटनाओं को प्रस्तुत करना आलोच्य उपन्यास कि विशेषता है।

निष्कर्ष :-

विभाजन-सम्बन्धी उपर्युक्त उपन्यासों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है की, "और इन्सान मर गया", "झूठा-सच", "तमस" आदि उपन्यास विभाजनसम्बन्धी उपन्यासों में अपना एक विशिष्ठ स्थान रखते हैं। क्योंकि आलोच्य उपन्यासों में विभाजन पूर्व तथा विभाजन के बाद की संपूर्ण स्थितियों का ऐतिहासिकता के आधार पर सजीव तथा यथार्थ चित्रण हैं। "तमस" में विभाजन पूर्व की, "झूठा-सच" में विभाजन पूर्व तथा विभाजन के बाद की और "और इन्सान मर गया" में विभाजन के बाद की स्थिति का व्यापक चित्रण हुआ है, इतना सूक्ष्म और गहरा चित्रण अन्य किसी कृती में नहीं हुआ है। सागर जी ने "और इन्सान मर गया" विभाजन के तुरन्त बाद लिखा है इसलिऐ उनके कृति में जितनी यथार्थता है उतनी अन्य किसी कृति में नही।

आलोच्य उपन्यास राजनीतिक, सामाजिक उपन्यास होते हुए भी ऐतिहासिक घटनाओं के यथार्थ चित्रण से अपना एक ऐतिहासिक महत्व भी रखते हैं। आलोच्य उपन्यास विभाजन सम्बन्धी उपन्यासों मे महत्तम उपलब्धियाँ हैं। आलोच्य उपन्यास हिन्दी साहित्य को एक मौलिक देन है।

× × ×